सं. श्रो.वि./एफ़.डी./125-85/28937.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. के पी. इन्जिनियर्स, डी.एल.एफ़ इण्डस्ट्रीयल एरिया, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री देविन्द्र राज तथा प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीतींगिक विवाद है;

ग्रीर चं कि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हैतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इस लिए अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-अम-68/5254, दिनांक 20 जून, 1968 को साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी-अम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा अभिक के बीच यातो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:—

वया श्री देवित्द्र राज की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं. श्रो. वि./जी.जी.एत./23-85/28944.—बूंकि दूरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं॰ 1. परिवहत श्रायुक्त हरियाणा, चण्डीगढ़ 2. जनरल मैंनेजर, हरियाणा रोडवेज, रिवाड़ी, (गुड़गांवां), के श्रीमक श्री नन्द किशोर तथा प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीधोगिष्ठ विवाद है।

धीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिगंग हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं

इसलिये, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रवान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना संव 5415-3-अम-68/5254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी-अम-57/11245, दिनांक 7 फरवरों, 1958 द्वारा उसते अधिसूचना की घारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनगंय के लिये निदिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा अभिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :--

क्या श्री नन्द किशोर की सेवाभ्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

खं. घो.वि./जी.जी.एन./15-85/28952,—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै०1 सचिव हरियाणा राष्य बिजली बोर्ड, चन्डीगढ़ 2. अधीक्षक अभियन्ता (आप्रेशन) हरियाणा राज्य बिजली बोर्ड महरोली रोड, गुड़गांवा 3. कार्यकारी अभियन्ता (आप्रेशन) हरियाणा राज्य बिजली बोर्ड, रिवाड़ी, के अमिक श्री चरन सिंह तथा प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीधोगिक विवाद है;

धीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, ग्रव, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रधिनियम, 1947, की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं० 5415-3-श्रम-68/5254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रधिसूचना स. 11.495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिधिसूचना की घारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे मुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिये निर्दिश्ट करने हैं, जो कि प्रबन्ध्रकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से मुसंगत श्रथवा सम्बन्धित मामला है :---

अया श्री चरन सिंह की सेवाओं का समापन न्योयोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तों वह किस राहत का ह्वारार है ?

सं. म्रो. वि./एफ.डी./62-85/28961.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० गुडईयर लि०., बल्लबगढ़, के श्रीमक श्री एस.सी.रावत तथा प्रचन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

ग्रौर चंकि हरियाणा क राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस्लिए अब औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रकार करत हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-अम-68/5254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी-अम/57/11245, दिनांक 7 फ़रवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिमूचना की धास 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला क्यापानिणय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसगत अथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री एस. सी. रावत की सेवाओं का समापन व्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?